राष्ट्रीय संस्करण

# दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 137

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, शुक्रवार, 25 अक्टूबर 2019

www.jagran.com

पृष्ठ 16

ॐ धन्वंतरये नमः ।।

# हरियाणा और महाराष्ट्र में फिर भाजपा सरकार

- हरियाणा में 40 सीटों पर जीती भाजपा, छह निर्दलीय आए साथ
- हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस को बड़ी सफलता, 31 पर जीत
- चमत्कार के बाद भी किंगमेकर नहीं बन पाए दुष्यंत चौटाला
- महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना गठबंधन को स्पष्ट बहुमत

**जेएनएन, नई दिल्ली:** लोकसभा चुनाव में जबर्दस्त जीत के बाद अब हरियाणा और महाराष्ट्र में जनता ने फिर भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार पर मुहर लगा दी है। गुरुवार को आए विधानसभा चुनाव के नतीजे भाजपा के लिए अनुमानों से कमतर रहे, लेकिन पार्टी दोनों राज्यों में सरकार बनाने जा रही है। हरियाणा में 90 में से 40 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी भाजपा को छह निर्दलीयों का समर्थन मिला है। महाराष्ट्र में भाजपा और शिवसेना गठबंधन को 288 में से 161 सीटों पर जीत के साथ स्पष्ट बहुमत मिला है। भाजपा नेतृत्व ने भी दोनों राज्यों में अपने मुख्यमंत्रियों पर भरोसा जताया है। जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हरियाणा में मनोहर लाल खट्टर और महाराष्ट्र में देवेंद्र फड़नवीस को फिर कमान सौंपने की पुष्टि की है। मनोहर लाल शुक्रवार को राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे।

हरियाणा में नतीजे काफी चौंकाने वाले रहे। यहां सबसे ज्यादा चौंकाया सालभर पहले अस्तित्व में आई जननायक जनता पार्टी (जजपा) ने। पिछले साल ही पारिवारिक विवाद के बाद इनेलो से अलग होकर दुष्यंत चौटाला ने पार्टी गठित की थी। जजपा ने पहली ही बार में 10 सीटों पर जीत हासिल कर ली। नतीजों के बाद जजपा को किंगमेकर की भूमिका में देखा जा रहा था। हालांकि भाजपा को सात में से छह निर्दलीयों का समर्थन मिलने के बाद जजपा का चमत्कारिक प्रदर्शन भी उसे कुछ खास फायदा दिलाता नहीं दिख रहा है। हरियाणा के नतीजे कांग्रेस के लिए भी अच्छे रहे। पार्टी 15 से 31 सीट पर पहुंच गई। चुनाव के ठीक पहले कांग्रेस में उभरी कलह और उठापटक के बावजूद ये नतीजे कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने वाले हैं। सीटों के लिहाज से नतीजे भाजपा के लिए थोड़ा निराशाजनक रहे। पिछले साल 47 सीटें जीतने वाली भाजपा 40 सीटों पर आ गई। हरियाणा के नतीजों में भाजपा के लिए सोचने वाली बात यह है कि सात निर्दलीयों में से छह भाजपा से जुड़े रहे हैं। भाजपा के लिए बड़ा झटका यह भी है कि राज्य सरकार में कैबिनेट का हिस्सा रहे आठ मंत्री चुनाव हार गए हैं।

महाराष्ट्र के नतीजे बहुत ज्यादा उलटफेर वाले तो नहीं कहे जा सकते हैं, लेकिन उम्मीदों से दूर जरूर हैं। विश्लेषकों का मानना है कि देश में फैला आर्थिक सुस्ती का साया महाराष्ट्र में भाजपा के नतीजों पर दिखा है। 2014 में अकेले लड़कर 288 में 122 सीटें जीतने वाली भाजपा के खाते में इस बार नतीजों और रुझानों के आधार पर 105 सीटें आती दिख रही हैं। शिवसेना भी 63 से 56 पर आ गई है। सबसे ज्यादा फायदे में शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) रही है। राकांपा का आंकड़ा इस बार 41 से 54 पर पहुंच गया है। सोनिया गांधी के हाथ में दोबारा कमान आने के बाद कांग्रेस भी बढ़त में दिखी। पार्टी को 2014 के 42 के मुकाबले 44 सीट मिली है। नतीजों से सरकार गठन के गणित पर ज्यादा असर पड़ने की उम्मीद नहीं है। हालांकि उपमुख्यमंत्री शिवसेना को मिलेगा या नहीं, इस मुद्दे पर न तो फड़नवीस ने मुंह खोला है, न ही उद्धव ठाकरे ने। फिलहाल उद्धव यह कहकर ताना मारने से नहीं चूके कि जिनके नेत्र बंद थे, उन्हें खोलकर जनता ने अंजन लगा दिया है। उम्मीद है कि अब पीछे की गई गलतियां दोहराई नहीं जाएंगी।

जनादेश (विशेष) >> पेज 4,5

हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद गुरुवार को नई दिल्ली भाजपा मुख्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ● प्रेट्र

हरियाणा और महाराष्ट्र के सीएम ने स्वच्छ प्रशासन दिया। दोनों राज्यों की जनता ने भी उन पर भरोसा जताया है। अगले पांच साल उन्हें और मेहनत से जनता की सेवा करनी होगी।
– नरेंद्र मोदी

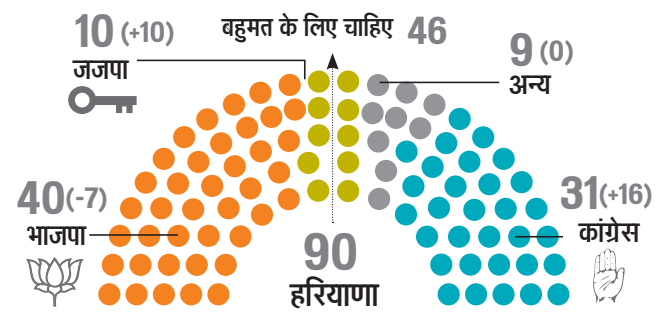


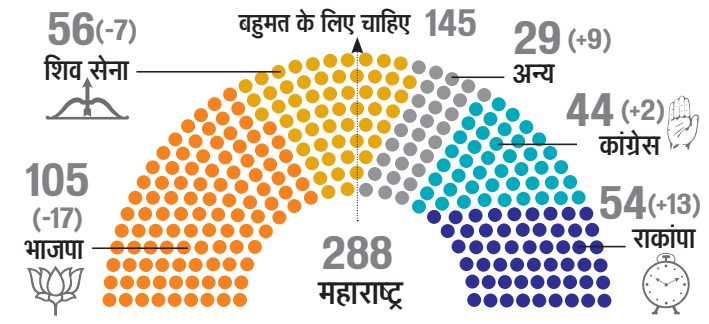


## क्या रहे कारण?

**हरियाणा**

- सीट बंटवारे में जाट समुदाय की अनदेखी भाजपा पर भारी पड़ी
- भाजपा कार्यकर्ता जमीनी स्तर पर संवाद बनाने में विफल रहे
- बागियों को नहीं साध पाना भी सत्ताधारी दल की विफलता रही
- हुड्डा के हाथ में कमान देना कांग्रेस के लिए फायदेमंद रहा

**महाराष्ट्र**

- विदर्भ क्षेत्र में कोशिशों के बाद भी किसानों की आत्महत्याएं नहीं रुकीं
- पवार के परिवार पर ईडी का प्रहार मराठा समाज को हजम नहीं हुआ
- भाजपा-शिवसेना गठबंधन के कारण कई दावेदार बागी हो गए
- मंदी और बेरोजगारी का असर भी भाजपा के लिए संकट बना

## नतीजों के मायने

- पुरजोर ताकत झोंकने के बाद भी दोनों विधानसभा चुनाव के उम्मीदों से कमतर नतीजे भाजपा को सोचने पर मजबूर करेंगे
- नतीजे यह भी दिखाते हैं कि विस चुनाव में केवल राष्ट्रीय मुद्दे नहीं बल्कि स्थानीय मसलों पर भी तवज्जो की जरूरत
- लोकसभा चुनाव में मिली शिकस्त के बाद कांग्रेस के लिए नतीजे कार्यकर्ताओं में उत्साह भरने वाले साबित होंगे

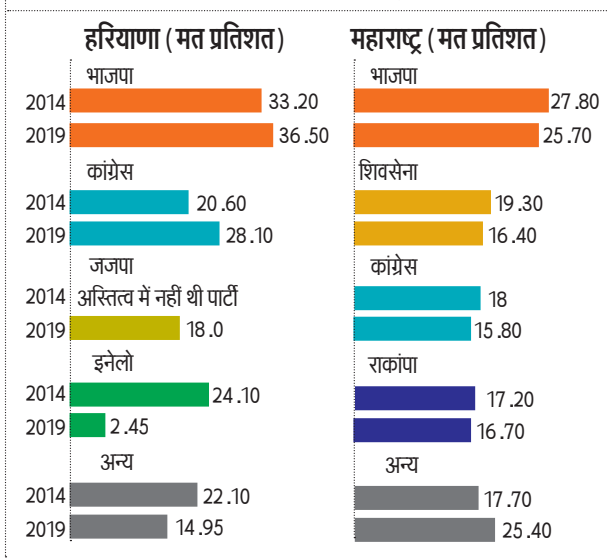


## अब आगे क्या होगा?

**हरियाणा:** भाजपा को सात में से छह निर्दलीयों का समर्थन मिलना तय माना जा रहा है। इससे बहुमत के लिए जरूरी 46 विधायकों का आंकड़ा पूरा हो जाएगा। पार्टी को जजपा का भी साथ मिल सकता है। कांग्रेस के लिए राह मुश्किल है। उसे न केवल जजपा बल्कि पांच निर्दलीयों का साथ जरूरी होगा।

**महाराष्ट्र:** भाजपा-शिवसेना गठबंधन की सरकार आसानी से बन जाएगी। हालांकि सरकार गठन की शर्तों पर थोड़ा-बहुत पेच फंस सकता है। नतीजों के तुरंत बाद शिवसेना की ओर से आए बयानों में भी ऐसे संकेत मिले हैं।

## 17 राज्यों में उपचुनावों में ये रही तस्वीर

| विधानसभा सीटें | |
|---|---|
| **अरुणाचल प्रदेश (1)** | |
| निर्दलीय | 1 |
| **असम (4)** | |
| एआइयूडीएफ | 1 |
| भाजपा | 3 |
| **बिहार (5)** | |
| एआइएमआइएम | 1 |
| निर्दलीय | 1 |
| जदयू | 1 |
| राजद | 2 |
| **छत्तीसगढ़ (1)** | |
| कांग्रेस | 1 |
| **गुजरात (6)** | |
| भाजपा | 3 |
| कांग्रेस | 3 |
| **हिमाचल प्रदेश (2)** | |
| भाजपा | 2 |
| **केरल (5)** | |
| माकपा | 2 |
| कांग्रेस | 2 |
| आइयूएमएल | 1 |
| **मध्य प्रदेश (1)** | |
| कांग्रेस | 1 |
| **मेघालय (1)** | |
| यूडीएफ | 1 |
| **ओडिशा (1)** | |
| बीजद | 1 |
| **पुडुचेरी (1)** | |
| कांग्रेस | 1 |
| **तेलंगाना (1)** | |
| टीआरएस | 1 |
| **पंजाब (4)** | |
| कांग्रेस | 3 |
| शिअद | 1 |
| **राजस्थान (2)** | |
| कांग्रेस | 1 |
| रालोपा | 1 |
| **सिक्किम (3)** | |
| भाजपा | 2 |
| एसकेएम | 1 |
| **तमिलनाडु (2)** | |
| अन्नाद्रमुक | 2 |
| **उत्तर प्रदेश (11)** | |
| अपना दल (सोनेलाल) | 1 |
| भाजपा | 7 |
| सपा | 3 |

| लोकसभा सीटें | | |
|---|---|---|
| समस्तीपुर (बिहार) | लोजपा | |
| सतारा (महाराष्ट्र) | राकांपा | |

## सरोकार

### आइये मिलकर मनाएं 'यह दिवाली अलग निराली'

**नई दिल्ली :** यह दिवाली अलग और निराली कैसे मनाएं..., देशभर के हजारों स्कूली बच्चों ने लंग केयर फाउंडेशन की वेबसाइट एलसीएफ.ओआरजी.इन पर एक से एक उपाय साझा किए हैं। बच्चों ने वीडियो और पोस्टर अपलोड कर दिल को छू जाने वाले सुझाव दिए हैं, जो बताते हैं कि पर्यावरण व स्वास्थ्य संरक्षण उनके लिए प्राथमिक विषय है। (पेज-10)

## जागरण विशेष

### अठन्नी जिन जाना, इ हौ मइया क खजाना...

**वाराणसी :** साल में सिर्फ चार दिनों के लिए खुलने वाले काशी के स्वर्णमयी अन्नपूर्णेश्वरी दरबार में वितरण के लिए इस साल मंदिर प्रबंधन ने 4.50 लाख अठन्नियां (पचास पैसे का सिक्का) मंगाई हैं। अपनी सौभाग्यशाली अठन्नी पाने के लिए देश-विदेश से भक्तों की भीड़ उमड़ आई है। (पेज-10)

## ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में शीर्ष 50 के और करीब पहुंचा भारत

- विश्व बैंक की इस वर्ष की रैंकिंग में भारत 77वें से 63वें स्थान पर आया
- जीएसटी को सरल बनाने से रैंकिंग में और सुधार की उम्मीद : सीतारमण

नई दिल्ली में गुरुवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने विश्व बैंक द्वारा जारी ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की नवीनतम रैंकिंग पर प्रेसवार्ता की। प्रेट्र

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाने की कोशिशों के चलते भारत ने फिर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। विश्व बैंक की नवीनतम रैंकिंग में भारत ने 14 पायदान की छलांग लगाते हुए दुनियाभर में 63वां स्थान हासिल किया है। पिछले वर्ष 190 देशों में भारत की रैंकिंग 77वीं थी। ताजा रैंकिंग जारी होने के बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, जीएसटी को और सरल बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उम्मीद है इससे रैंकिंग और सुधरेगी। भारत का लक्ष्य अगले वर्ष शीर्ष 50 देशों में शामिल होने का है। सीतारमण ने कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राज्यों को भी गंभीर प्रयास करने होंगे। संपत्ति के रजिस्ट्रेशन को लेकर नियम व प्रक्रिया सरल बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, अगले वर्ष की रैंकिंग के आकलन में दिल्ली, मुंबई के साथ ही कोलकाता व बेंगलुरु भी शामिल होंगे।

विश्व बैंक के मुताबिक, भारत की रैंकिंग में सुधार की मुख्य वजह दिवालिया कानून को सफलतापूर्वक लागू करना रहा है। लगातार तीसरी बार देश बेहतर प्रदर्शन करने वाले शीर्ष 10 देशों में है। न्यूजीलैंड इस बार भी पहले स्थान पर रहा। सिंगापुर दूसरे, हांगकांगको तीसरा स्थान मिला है। रैंकिंग की इस सूची में अमेरिका छठे नंबर पर है।

रिपोर्ट के मुताबिक, पीएम मोदी के मेक इन इंडिया अभियान ने ना सिर्फ विदेशी निवेश को आकर्षित किया, बल्कि मैन्यूफैक्चरिंग को भी गति दी है। डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स के निदेशक सिमोन जानकोव ने कहा, भारत शीर्ष 50 देशों में शामिल होने की राह पर है। शीर्ष 25 में शामिल होने के लिए सरकार को अगले चरण के सुधारों पर काम शुरू करना होगा। रैंकिंग की घोषणा ऐसे वक्त में हुई है जब विश्व बैंक, आइएमएफ और आरबीआइ समेत कई एजेंसियों ने भारत की विकास दर के अनुमान में कमी की है।

### नई शिक्षा नीति में बदलाव, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद का होगा गठन

**नई दिल्ली :** प्रस्तावित नई शिक्षा नीति जल्द ही कुछ बदलावों के साथ सामने आएगी। इसकी पूरी तैयारी की जा चुकी है। इसे अंतिम रूप दे दिया गया है। जो बड़े बदलाव सामने आए हैं, उनमें शिक्षा को मजबूती देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की जगह अब राष्ट्रीय शिक्षा परिषद का गठन सबसे अहम है। (पेज-3)

### भारतीय श्रद्धालुओं के लिए साल भर खुला रहेगा करतारपुर कॉरिडोर

**गुरदासपुर :** पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब के खुले दर्शन के लिए भारत-पाकिस्तान के बीच बनाए गए कॉरिडोर को लेकर गुरुवार को डेरा बाबा नानक में दोनों देशों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर जीरो लाइन पर हुई बैठक में विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय के अधिकारी शामिल थे। (पेज-6)

### बांग्लादेश में किशोरी को जिंदा जलाने में 16 को मौत की सजा

**ढाका :** बांग्लादेश की एक अदालत ने मदरसे में किशोरी को जिंदा जलाने के मामले में गुरुवार को 16 लोगों को मौत की सजा सुनाई। 18 साल की नुसरत जहां रफी ने मदरसे के मौलवी के खिलाफ दुष्कर्म की शिकायत की थी। शिकायत वापस नहीं लेने पर उसे जिंदा जला दिया गया था। इस घटना के खिलाफ देशभर में विरोध प्रदर्शन हुए थे। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने आरोपितों को न्याय के दायरे में लाने का भरोसा दिया था। (पेज-13)

## टेलीकॉम कंपनियों को चुकाने होंगे 92,000 करोड़ रुपये

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा, एजीआर पर दूरसंचार विभाग की गणना का तरीका सही
- पहले से आर्थिक दबाव झेल रहे सेक्टर पर इस फैसले से पड़ेगी जबर्दस्त मार

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

वित्तीय संकट से गुजर रही टेलीकॉम कंपनियों को सुप्रीम कोर्ट से जबर्दस्त झटका लगा है। कोर्ट ने दूरसंचार विभाग (डीओटी) को तीन प्रमुख टेलीकॉम कंपनियों से एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एजीआर) मद में 92,000 करोड़ रुपये वसूलने की याचिका को मंजूरी दे दी है। इस बकाए का भुगतान कितने दिनों में किया जाएगा, इसका निर्धारण भी कोर्ट ही करेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में कहा, एजीआर में लाइसेंस फीस और स्पेक्ट्रम उपयोग के अलावा अन्य आय भी शामिल करने का डीओटी का तर्क उचित है। जस्टिस अरुण मिश्र की अध्यक्षता वाली तीन जजों की बेंच ने इस संबंध में टेलीकॉम कंपनियों की दलीलों को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा, टेलीकॉम कंपनियों को पूरी राशि ब्याज के साथ विभाग को अदा करनी होगी। अदालत के फैसले का असर शेयर बाजार पर भी दिखा और वोडाफोन आइडिया के शेयर में 19 फीसद की गिरावट दर्ज की गई।

बेंच ने स्पष्ट किया, इस मुद्दे पर अब कोई मुकदमेबाजी नहीं होगी। अदालत इस राशि की गणना और टेलीकॉम कंपनियों के भुगतान की समय सीमा तय करेगी। इसी साल जुलाई में केंद्र सरकार ने कोर्ट को बताया था कि भारती एयरटेल, वोडाफोन आइडिया और एमटीएनएल व बीएसएनएल पर लाइसेंस फीस का 92,000 करोड़ रुपये बकाया है। नई टेलीकॉम पॉलिसी के तहत टेलीकॉम लाइसेंस में कंपनियों को एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू का एक हिस्सा सरकार के साथ साझा करना अनिवार्य कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त टेलीकॉम कंपनियों पर स्पेक्ट्रम के प्रयोग के लिए यूसेज चार्जेज देना भी होगा।

टेलीकॉम कंपनियां टीडीसैट के निर्णय के विरोध में शीर्ष अदालत पहुंची थीं। टेलीकॉम डिसप्यूट्स सेटलमेंट एंड अपीलेट ट्रिब्यूनल (टीडीसैट) ने फैसले में कहा था कि गैर-टेलीकॉम सेवाओं से प्राप्त रेवेन्यू मसलन किराया, अचल संपत्तियों की बिक्री, लाभांश और ट्रेजरी इनकम को एजीआर में शामिल किया जाना चाहिए। (पेज-12 भी देखें)

### इन कंपनियों पर आंच

| कंपनी | बकाया |
|---|---|
| भारती एयरटेल | 21,682.13 |
| वोडाफोन | 19,823.71 |
| आरकॉम | 16,456.47 |
| बीएसएनएल | 2,098.72 |
| एमटीएनएल | 2,537.48 |

(नोट : आंकड़े करोड़ रुपये में)

### जम्मू-कश्मीर के बीडीसी चुनाव में रिकॉर्ड, 98.3 फीसद मतदान

**राज्य ब्यूरो, जम्मू :** नए जम्मू-कश्मीर में वाकई बदलाव की बयार बहने लगी है। पहली बार हुए जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में ब्लॉक डेवलपेंट काउंसिल (बीडीसी) के अध्यक्ष पद के चुनाव में 98.3 फीसद पंचों-सरपंचों ने मतदान कर अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के फैसले पर मुहर लगा दी। कश्मीर में भी मतदान में खासा उत्साह दिखाई दिया। श्रीनगर में 100 फीसद तो शोपियां में 65 फीसद मतदान हुआ। इसके साथ ही चुनाव में विजयी रहे चेयरमैनों के कंधों पर ग्रामीण विकास की जिम्मेदारी आ गई है।

बीडीसी चुनाव में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन दोहराया है। 316 ब्लॉकों में से 307 में हुए चुनाव में भाजपा को 81, कांग्रेस को एक और पैंथर्स पार्टी को आठ सीटें मिलीं। चुनाव में निर्दलीयों का दबदबा रहा। कुल मिलाकर 217 निर्दलीय उम्मीदवार जीतकर सामने आए हैं। इनमें से भी बड़ी संख्या में भाजपा के बागी हैं।

जम्मू-कश्मीर में 22 जिलों में 316 ब्लॉक हैं। इनमें से कोरम पूरा न होने के कारण 9 ब्लॉक में चुनाव नहीं हो सके। प्रदेश में कड़ी सुरक्षा के बीच हुए मतदान में 280 ब्लॉकों में चेयरपर्सन चुने गए। प्रदेश के 27 ब्लॉकों में चेयरपर्सन पहले निर्विरोध चुने गए थे। मतदान की प्रक्रिया सुबह नौ बजे से दोपहर एक बजे तक चली। सुबह 11 बजे तक अधिकतर पंच-सरपंचों ने वोट डाल दिया था। दोपहर तीन बजे मतगणना शुरू हुई थी।

आतंकी धमकियों को दिखाया ठेंगा पेज>>6

## बदली तस्वीर

महाराष्ट्र-हरियाणा में सरकार तो इस बार भी भाजपा की बनने जा रही है लेकिन तस्वीर बदली हुई है, जीतने वाले को कसक है, वहीं हारने वाले उत्साहित नजर आ रहे हैं

## बड़ी रोचक है विधानसभा चुनावों की यह जीत-हार

**त्वरित टिप्पणी**
**प्रशांत मिश्र**

- देवेंद्र फड़नवीस और मनोहर लाल खट्टर फिर से सीएम बनेंगे, पर शक्ति कम हो गई
- मन से हार चुकी कांग्रेस पार्टी ने दोनों राज्यों में बना ली है बढ़त

पांच साल पहले इसी वक्त भाजपा ने महाराष्ट्र और हरियाणा में एक रिकार्ड बनाया था। दोनों राज्यों में भाजपा ने न सिर्फ गौरव के साथ बड़ी जीत हासिल की थी बल्कि पहली बार अपना मुख्यमंत्री बनाया था। वह जीत केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार बनने के चार महीने बाद हुई थी। केंद्र में तो दोबारा नरेंद्र मोदी सरकार और बड़ी संख्या से जीतकर आ गई लेकिन इन दो राज्यों में क्या बदल गया? जीत तो इस बार भी हुई। सरकार भी बनने जा रही है लेकिन बहुत कुछ बदला-बदला सा है। दरअसल, इस बार चेहरा बदल गया। पिछली बार राज्यों में भी चेहरा मोदी ही थे। इस बार देवेंद्र फड़नवीस और मनोहर लाल खट्टर चेहरा थे और जनता ने स्पष्ट कर दिया कि उन्हें उनके प्रदर्शन, उनकी विश्वसनीयता पर परखा जाएगा। दोनों फिर से मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं लेकिन शक्ति थोड़ी कम हो गई है। जो नतीजे आए हैं वह विपक्ष की निष्क्रियता के बावजूद हैं। अनुमान लगाया जा सकता है कि अगर विपक्ष स्थानीय मुद्दों के साथ आक्रामक होता और भाजपा में अभियान की कमान मोदी और अमित शाह जैसे सशक्त लोगों पर केंद्रित न होती तो क्या होता। अगर कांग्रेस की बात की जाए तो कहा जा सकता है कि राहुल गांधी से कमान लेने के बाद सोनिया गांधी ने समझदारी के फैसले लेने की शुरुआत की है। अगर राहुल की लीक पर ही हरियाणा में भूपेंद्र हुड्डा को दूर रखा जाता तो कांग्रेस इस मुकाम पर नहीं पहुंचती कि उत्साह का संचार हो।

महाराष्ट्र में अपेक्षा से काफी नीचे प्रदर्शन की अलग-अलग दलीलें दी जा सकती हैं। कहा जा सकता है कि अलग-अलग लड़े होते तो ज्यादा अच्छा प्रदर्शन होता क्योंकि तब त्रिकोणीय लड़ाई होती और भाजपा के पास आजमाने को ज्यादा सीटें होतीं। अब उस शिवसेना पर निर्भरता बढ़ गई है जिसने रुझान आने के साथ आंखें भी दिखानी शुरू कर दी हैं। सरकार तो बन गई लेकिन वहां मंत्रिमंडल गठन में कितनी खींचतान होगी यह समझा जा सकता है। और हरियाणा...? अभी अभी लोकसभा चुनाव में भाजपा का जो प्रदर्शन था उसके अनुसार भाजपा 80 सीटें जीतती। लेकिन नतीजा आया तो कांटे की टक्कर में फंस गई। वह भी उस कांग्रेस से जो मन से चुनाव हार चुकी थी। आखिर क्या कारण था। प्रदेश नेतृत्व ने केंद्र को सच्चाई नहीं बताई थी? क्या खेमेबाजी फिर हावी रही? या फिर प्रदेश के प्रभावी जाट समुदाय के लिए यह संदेश कि भाजपा में उनके लिए फिलहाल बड़ा स्थान नहीं है, यह भारी पड़ा। ये सभी कारण हो सकते हैं। और केंद्रीय नेतृत्व को इस सभी के जवाब ढूंढने होंगे वरना आश्चर्य नहीं कि दूसरे राज्यों में भी इसका असर दिखे। खासकर दिल्ली में जहां अगले कुछ महीनों में ही चुनाव हैं। और उससे पहले झारखंड में जहां विपक्ष फिलहाल बिखरा हुआ तो है लेकिन मौजूद है। इन दोनों राज्यों के लिए भाजपा को रणनीति तय करनी होगी। भाजपा को एक बात और याद रखनी होगी कि विधानसभा चुनावों में स्थानीय मुद्दों की ज्यादा अहमियत होती है। अगर यह कहा जाए कि केंद्र सरकार के हाल में अनुच्छेद 370 हटाने जैसे फैसले की चर्चा नहीं होती तो स्थिति और खराब हो सकती थी तो गलत नहीं होगा।

अगर विपक्ष के नजरिए से देखा जाए तो उनके लिए पीठ थपथपाने की बात नहीं है क्योंकि भूमिका जनता की है विपक्ष तो खुद हैरत में है। विपक्ष की ओर से ऐसा कुछ नहीं किया गया इसके लिए उन्हें श्रेय दिया जाए। जनता ने प्रदेश सत्ता के खिलाफ थोड़ी नाराजगी जताई। नजारा मतदान के वक्त ही दिख गया था जब लगभग आठ फीसद कम मतदान हुए थे। यह जागने का वक्त है। भाजपा के लिए भी और विपक्ष के लिए भी। भाजपा को अतिविश्वास से बाहर आकर झांकना होगा और विपक्ष को यह अहसास करना होगा कि जमीनी लड़ाई में मजबूती से डटने के लिए संगठन से लेकर नेतृत्व तक मजबूत करने होंगे।

## कश्मीर में आतंकियों ने की दो ट्रक चालकों की हत्या

- सुधरते हालात से हताश आतंकी ट्रक चालकों को बना रहे निशाना
- एक चालक लापता, दो ट्रकों और एक लोड कैरियर को लगाई आग

**राज्य ब्यूरो, श्रीनगर**

कश्मीर के सुधरते हालात से हताश आतंकियों ने गुरुवार को शोपियां में हमला कर सेब लेने आए दो ट्रक चालकों की हत्या कर दी। हमले में एक अन्य चालक जख्मी है। एक लापता भी बताया जा रहा है। इसके अलावा आतंकियों ने दो ट्रकों और एक लोड कैरियर को आग लगा दी। सुरक्षाबलों ने आतंकियों को पकड़ने के लिए अभियान चलाया है। इसी बीच, पुलिस ने राष्ट्रीय राजमार्ग व दक्षिण कश्मीर के भीतरी इलाकों में सेब लेने गए चालकों को उनके वाहनों समेत निकटवर्ती सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया है। बता दें कि पिछले 15 दिनों में अन्य राज्यों के ट्रक चालकों और सेब व्यापारियों पर तीसरा आतंकी हमला है।

राज्य के पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने बताया कि शोपियां के चित्रीगाम में आतंकियों ने हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के ट्रकों को रोक कर अंधाधुंध फायरिंग की। इसमें दो ट्रक चालकों की मौत हो गई और एक अन्य जख्मी हो गया। मृतकों में एक की पहचान राजस्थान के अलवर निवासी इलियास खान के रूप में हुई है। सूत्रों के अनुसार, दूसरा चालक भी राजस्थान का रहने वाला था। वहीं, हमले में घायल गुरदासपुर (पंजाब) निवासी ट्रक चालक जीवन सिंह को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने बताया कि आतंकियों का निशाना बने ट्रक चालक बिना सुरक्षाबलों को सूचित किए शोपियां के भीतरी इलाके जैनपोरा में अंधेरा होने के बाद अपने वाहन लेकर आ गए थे। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक आतंकी वहां से भाग निकले थे।